INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2023

सतना जिले के विकसित पर्यटन में महिला पर्यटकों का अध्ययन

श्रीमती साधना कुशवाहा[1], डॉ. आर.के. शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, भूगोल शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]प्राचार्य इन्द्रा स्मृति महाविद्यालय, न्यू रामनगर, सतना (म.प्र.)

सारांश –

किसी भी विकासशील अर्थव्यवस्था में मानव शक्ति का सदुपयोग करने एवं बेरोजगारों को समाप्त करने तथा रोजगार के अवसरों के उपलब्ध कराने में पर्यटन स्वयं एक समाधान है। पर्यटकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नये उद्योगों के पनपने एवं विकसित होने में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। पर्यटन की विकास क्रियाओं द्वारा पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटन उद्योग के बाहर भी अन्य उद्योगों में रोजगार के अवसरों को उपलब्ध कराने का महान श्रेय पर्यटन उद्योग को है।

मुख्य शब्द – पर्यटन, पर्यटक, रोजगार एवं महिला।

प्रस्तावना –

सतना जिले में धारकुण्डी आश्रम, मैहर धाम और चित्रकूट प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विद्यमान है। धारकुण्डी जिले के प्रमुख प्राकृतिक स्थल है, यहाँ की हरे–भरे जंगल, घाटियाँ महिला पर्यटकों का मन आकर्षित कर लेती है। जिले की मैहर मन्दिर एवं चित्रकूट विकसित पर्यटन स्थलों की श्रेणी में गिना जाता है। यहाँ पर वर्ष भर महिला पर्यटकों का आना–जाना लगा रहता है। सतना जिले के इन विकसित पर्यटन केन्द्रो पर महिला हेतु विशिष्ट सुविधा उपलब्ध है। पर्यटकों हेतु आवास, परिवहन, सुलभ शौचालय तथा अन्य दूसरी सम्पूर्ण सुविधाएं मौजूद है। पर्यटन जिले का सर्वाधिक व्यापक सेवा क्षेत्र है, इसके परिक्षेत्र में जिले की संस्कृति, परम्परा, चिकित्सा, व्यापार और खेल पर्यटन के क्षेत्र में आता है। इसका प्रमुख ध्येय पर्यटन को विकसित करना और बढ़ावा प्रदान करना, जिले की पर्यटन स्थल की महत्ता तथा गुणवत्ता को कायम रखना और मौजूद पर्यटन सुविधाओं व सेवाओं का विस्तार करना है ताकि जिले का आर्थिक विकास उच्च हो सके और महिला रोजगार व स्वरोजगार के अच्छे अवसर उपलब्ध हो सके।

पर्यटन केन्द्र न सिर्फ स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, अपितु दृष्टिगत है कि सामाजिक संरचना, संस्कृति एवं जीवन शैली को भी काफी प्रभावित करना प्रारंभ कर रहा है। विकसित पर्यटन केन्द्रों में क्षेत्रीय महिलाओं को स्वरोजगार/रोजगार प्राप्त होता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। सतना जिले की मैहर एवं चित्रकूट धाम विकसित पर्यटन केन्द्र में सम्मिलित है, यहाँ महिला पर्यटकों की स्वयं में व्यापक वृद्धि परिलक्षित हो रहे। पर्यटन के क्षेत्र में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु भी पर्यटन विभाग द्वारा कारगर कदम उठाये गये है। राज्य शासन महिलाओं की सुरक्षा के प्रति सम्पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ काम

कर रहा है। महिलाओं हेतु सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना के अन्तर्गत आयोजित इस जिला स्तरीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम द्वारा महिलाओं की सुरक्षा पर विशिष्ट ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। जिले के विकसित/प्रमुख पर्यटन केन्द्रों पर पुलिस चौकी स्थापित किया गया है, साथ ही स्थान–स्थान पर डायल 100 वाहन भी पुलिस जवानों के साथ पर्यटन स्थलों पर महिला पर्यटकों की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं।

सतना जिले के विकसित पर्यटन केन्द्रों पर महिला पर्यटकों के विश्राम गृहों को निर्मित कर उनके आगमन को सुगम और सरल बनाने का शासकीय प्रयास किया गया है। जिले की मैहर और चित्रकूट धार्मिक पर्यटन स्थलों का पर्यावरण महिला पर्यटकों हेतु अनुकूल है। अतः इसी वजह से इन पर्यटन स्थलों पर महिला आगन्तुकों का आगमन अत्यधिक होता है। जिले की धार्मिक मैहर धाम परिवहन की दृष्टि से उत्तम पर्यटन स्थल है, यहाँ पर पर्यटकों की आवश्यकता से सम्बन्धित सम्पूर्ण सुविधाएं उत्तम प्रकार का है। जिले के पर्यटन स्थलों का समय–समय पर मेलों के रूप में पर्यटकों की भीड़ उमड़ती है, जिससे आय की प्राप्ति में अधिकता होती है। पर्यटन विकास के माध्यम से जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर आवास परिवहन और बुनियादी सुविधाओं की सुव्यवस्था किया गया है जो महिला पर्यटकों को काफी आकर्षित करता है। आवास और परिवहन के क्षेत्र में राज्य की योजनाओं के अलावा केन्द्रीय पर्यटन कार्यालय से भी पर्यटन केन्द्रों पर आवास, परिवहन, मनोरंजन और साहसिक पर्यटन से सम्बन्धित योजनाओं को स्वीकृत प्राप्त कर महिला पर्यटकों को अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान करने का सफल प्रयास किया गया है।

वैदिक काल से वर्तमान समय तक देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक गतिविधियों में सतना जिले के महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिले में हिन्दुओं के आराध्य देव प्रभुरामचन्द्र जी के वनवास की समयावधि की आश्रय स्थान होने का गौरव प्राप्त है। सतना जिला पवित्र सतना, टमस, सोन, सिमरावल एवं करावल इत्यादि जैसी पावन नदियों का महत्वपूर्ण क्षेत्र है, यहाँ पर प्राचीन और अर्वाधीन सभ्यताओं का सुखद संगम स्थल है। यह जिला रेल मार्गों व सड़क मार्गों द्वारा एक–दूसरे जिलों को मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। सतना जिला व्यापार, खनिज, वनोपज और आदिवासी जनजीवन की दृष्टिकोण से परिपूर्ण जिला माना जाता है। पर्यटन स्थलों से सम्पन्न सतना जिले की विकास में इस भू–भाग की महिलाओं का व्यापक सहयोग मिल रहा है, जिससे यह जिला पर्यटन केन्द्र के रूप में उभरकर विश्व में अपनी पहचान बनाने में सफल हो रहा है।

सतना जिले के विकसित पर्यटन स्थलों में महिलाओं की स्थिति पूर्व की तुलना में आज काफी बदल चुकी है, जिससे जिले के पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने हेतु तेजी से अग्रसर होती जा रही है। विकसित क्षेत्रों में महिलाओं के विश्राम, आवास, परिवहन, शौचालय, मनोरंजन इत्यादि की अच्छी एवं उचित व्यवस्था होने के कारण ही आज सतना जिले के चित्रकूट एवं मैहर पर्यटन स्थल पूर्णतः महिलाओं की दृष्टि से सर्वसुलभ विकसित पर्यटन स्थल है। इन पर्यटन स्थल के विकसित होने से न केवल राज्य के अपितु अन्य दूसरे राज्यों व विदेशों के पर्यटक महिलाएं भी इन पर्यटन स्थलों एवं भ्रमण करने में संकोच नहीं करती हैं। महिला पर्यटकों की दृष्टि से जिले के उक्त दोनों पर्यटन स्थल पूर्णरूपेण विकसित हैं, जहाँ पर पर्यटक महिलाओं की सुरक्षा हेतु शासन स्तर पर सुरक्षा की भी व्यवस्था की गयी है। इसी कारण जिले के इन पर्यटन स्थलों पर देशी व विदेशी पर्यटक महिलायें बिना किसी भय के निडर होकर भ्रमण करती हैं और स्वयं को सुरक्षित महसूस करती हैं।

विश्लेषण –

भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश का गठन दिनांक 01 नवम्बर 1956 को मध्यभारत विन्ध्यप्रदेश महाकौशल भोपाल पूर्वी मध्यप्रदेश के महाकौशल व छत्तीसगढ़ अंचल को मिलाकर हुआ। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों व प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से भी बहुत ही सम्पन्न राज्य है।

मध्यप्रदेश राज्य पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है, इसे पर्यटकों का स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ के पर्यटन केन्द्रों का आकर्षण भारतवर्ष के विभिन्न पर्यटन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। इस प्रदेश में लगभग 450 पर्यटन केन्द्र हैं जिनमें से प्रमुख धार्मिक एवं पुरातात्विक केंद्र विकास के लिये चुने गये हैं, जो इस प्रकार हैं –(1) खजुराहों, (2) कान्हा, (3) साँची भोपाल, (4) माण्डू इंदौर, (5) पचमढ़ी, (6) बांधवगढ़, (7) अमरकंटक, (8)ग्वालियर–शिवपुरी,

(9) उज्जैन, (10.) ओंकारेश्वर–महेश्वर, (11) चित्रकूट, (12) भेड़ाघाट, (13) बस्तर, (14) ओरछा। इन स्थलों को प्रमुख रूप से 4 वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थान – खजुराहो, साँची, माण्डू, ग्वालियर एवं ओरछा।
2. प्राकृतिक सौन्दर्य के साधन– पचमढ़ी, भेड़ाघाट एवं बस्तर।
3. धार्मिक महत्व के स्थान – अमरकंटक, ओंकारेश्वर महेश्वर, चित्रकूट
4. राष्ट्रीय उद्यान – शिवपुरी, कान्हा, बांधवगढ़, राष्ट्रीय वनोद्यान।

मध्यप्रदेश के गठन के बाद प्रदेश में अच्छे अवसर को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1961 में पर्यटन संचालनालय की स्थापना की गई तथा पर्यटन को और बढ़ावा देने के लिए अलग से एक निगम का गठन वर्ष 1978 में किया गया जिसे पर्यटन विकास निगम के नाम से जाना जाता है।

पर्यटन विकास द्वारा पर्यटन केन्द्रों पर आवास परिवहन एवं बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रचार एवं प्रसार के माध्यम से परिचलित भ्रमण का भी चालन किया जाता है।

आवास एवं परिवहन के क्षेत्र में राज्य की योजनाओं के अतिरिक्त केन्द्रीय पर्यटन कार्यालय से भी आवास परिवहन मनोरंजन तथा साहसिक पर्यटन सम्बन्धी योजनाओं को स्वीकृति प्राप्त कर पर्यटको को अधिक से अधिक सुविधायें प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

विकास एवं उन्नति, ज्ञान प्राप्ति एवं सेवा भाव रमणीक एवं मनोरंजक समाज तथा सुखी एवं शांत जीवन व्यतीत करना सदैव से ही मानव का एक परम लक्ष्य रहा है। इसी संदर्भ में पर्यटन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पर्यटन से सम्बन्धित समस्त सेवायें सामाजिक उन्नति से जुड़ी हुई है। मनोरंजन से लेकर विमान सेवायें व बड़े–बड़े होटल उद्योग से लेकर एक छोटे से वाहन चालक की सेवायें इसमें सम्मिलित हैं। ये समस्त सेवायें अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।

पर्यटन विकास की प्रक्रिया का प्रेरणा मानव स्वयं है वह एक पर्यटक के रूप में आराम व ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्रा एवं भ्रमण करता है आर्थिक लाभ सृजन हेतु विदेशों की यात्रा धार्मिक कार्य हेतु धार्मिक स्थलों की यात्रा करता है। पर्यटक, पर्यटन के रूप में किसी क्षेत्र के (आकर्षण) संसाधन (वस्तु) को ग्रहण करने, देखने को आता है जहां से पर्यटन प्रक्रिया का सृजन होता है।

वर्तमान समय मे सतना जिले के विकासशील पर्यटन स्थलों पर महिलाओं की स्थिति भी दिन प्रतिदिन सुधरती जा रही है। ऐसी स्थिति में सतना जिले के क्षेत्रीय महिला पर्यटक जो अपने क्षेत्र की सीमाओं में भ्रमण करते हैं उन्हें घरेलू पर्यटक की श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार सतना जिले के विकासशील पर्यटन स्थलों में जिले की सर्वाधिक पर्यटक महिलाएं जिले की सीमाओं के भीतर जाता है, चूँकि ऐसी स्थिति में जिले की अधिकांश महिला पर्यटक जिले की सीमाओं या राज्य के सीमाओं के अंदर ही भ्रमण का कार्य करती है। इसलिए उन्हें विदेशी महिला पर्यटकों की कठिनाइयों अथवा मुद्रा परिवर्तन, भाषा, पासपोर्ट, बीजा एवं स्वास्थ्य प्रमाण पत्र आदि का सामना नहीं करना पड़ता। राष्ट्रीय पर्यटक महिलाएं अपने दिन प्रतिदिन के उपयोग में आने वाली मुद्रा व भाषा का उपयोग करके ही काम चला लेती हैं, जिससे उन्हें विदेशी पर्यटन महिलाओं के समान कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ता। ऐसी स्थिति में देश की पर्यटक महिलाएं स्वतंत्र रुप से देश के सभी पर्यटन स्थलों का स्वच्छन्दता के साथ विचरण कर आनंद की अनुभूति कर सकती है। इसी तर्ज पर सतना जिले के विकासशील पर्यटन स्थलों यथा व्हाइट टाइगर, रामवन, जगत देव तालाब, मैत्री पार्क सतना व पुष्पकर्णी पार्क आदि पर महिलाएं निर्भीक होकर पर्यटन स्थलों का आनंद ले रही है, जिले के उक्त विकासशील पर्यटन स्थलों पर अभी महिला पर्यटकों से सम्बन्धित सुविधाओं का पूर्णतः उपलब्धता सुनिश्चित नहीं हो पायी है। जिससे जिले के इन पर्यटन स्थलों पर महिलाओं का आगमन कम होता है।

जिले के उक्त पर्यटन स्थलों के विकास हेतु जिले स्तर पर निजी निवेशकों की भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है ताकि सतना जिले के उक्त विकासशील पर्यटन स्थलों का तेजी से विकास पर महिला पर्यटकों के आगमन के अनुकूल बनाया जा सके। इससे जिले के पर्यटन स्थलों पर महिला पर्यटकों के तादात में वृद्धि होगी, जिससे जिले के राजस्व में वृद्धि होगी, जिसे जिले का आर्थिक विकास सुनिश्चित होगा और जिले में महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे महिला सशक्तीकरण की विचारधारा को सम्बल मिलेगा।

वर्ष 1978 में मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों का विकास करने की दृष्टि से मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम का गठन किया गया। निगम का कार्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों पर आवासीय, गैर आवासीय इकाइयों का संचालन, महिला पर्यटकों को पर्यटन स्थानों की जानकारी सुलभ करवाना, पर्यटन स्थलों पर साहित्य का प्रकाशन और पर्यटकों को परिवहन सुविधा मुहैया कराना है। निगम के अन्य दूसरे कार्यों में सम्मिलित यथा आवासीय परिसरों में आरक्षण, जिले के बाहर निगम के सेटेलाइट कार्यालयों से महिला पर्यटकों हेतु अनेक अभिरूचि, अवधि और दरों के पैकेज, अविकसित पर्यटन का संचालन इत्यादि में महिला पर्यटकों की भागीदारी जिले के पर्यटन विभाग की परामर्शदात्री समिति में महिलाओं की सहभागिता, संभागीय समिति और शासन की महिला पर्यटन सम्बन्धी समितियों से लिये गये निर्णयों पर कार्यवाही में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना। जिले के अविकसित पर्यटन स्थलों पर अभी आवासीय, खान पान एवं परिवहन इत्यादि की सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण महिला पर्यटकों का आगमन कम हो रहा है। राज्य शासन द्वारा 1996 में महिला पर्यटकों को अधिक से अधिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं, लेकिन जिले के अविकसित पर्यटन स्थल उक्त सुविधाओं से वंचित है।

जिले के अविकसित पर्यटन स्थलो के विकास पर शासन द्वारा ध्यान केन्द्रित किये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि जिले के इन अविकसित पर्यटन स्थलों का विकास महिला पर्यटकों की सुविधाओं एवं सुरक्षा ध्यान में रखते हुए किया जाता है तो इन अविकसित पर्यटन स्थलो के विकास में महिलाओं की भूमिका सराहनीय होगी, जिससे इन क्षेत्रों विशेषकर अविकसित पर्यटन स्थलों के भ्रमण की ओर महिला समुदाय का उन्मूलन होगा जिससे क्षेत्रीय महिलाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे और जिले की बेकारी में कमी आयेगी। इन स्थलों के विकसित हो जाने से देशी व विदेशी महिला पर्यटको का आगमन सतना जिले में होगा, जिससे नगर की अर्थव्यवस्था के विकास के साथ–साथ अविकसित पर्यटन स्थलों का विकास भी सुनिश्चित होगा। जिले के अविकसित पर्यटन स्थलों की स्थापना के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पर्यटन की दृष्टि से किसी विशेष स्थान का महिला पर्यटक दृष्टि से निर्माण तो नहीं किया गया, अपितु केन्द्र व राज्य सरकार के सहयोग से कुछ पर्यटन उद्यम, खनन केन्द्र और बांधों का निर्माण करवाया गया जिनमें बाणसागर सबसे महत्वपूर्ण परियोजना है, इसके साथ–साथ जिले के कुछ प्राचीन स्थलों का महिला पर्यटकों की दृष्टि से संरक्षण एवं उनमें सुधार के कार्य भी किये गये हैं। वर्तमान समय में महिला पर्यटकों के सुरक्षा एवं सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन स्थलों में सड़कों का निर्माण, आवासीय परिसरों का निर्माण एवं रेलवे लाइन का विस्तार इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप सतना जिले में महिला पर्यटकों का आना जाना बढ़ा है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सतना जिले के पर्यटन स्थलों पर महिलाओं का आगमन वर्ष भर पर्यंत निरन्तर बना रहता है। इसी दृष्टिकोण से मध्यप्रदेश शासन भी महिलाओं की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है ताकि जिले के बाह्य पर्यटन केन्द्रों में महिला पर्यटन स्थलों पर महिलाओं के आगमन से सम्बन्धित सभी सुविधाओं को मुहैया शासन पुरजोर कोशिश कर रहा है। अभी हाल में ही राज्य में महिला पर्यटन उद्योगों का बढ़ावा देने हेतु प्रवासीय महिलाओं पर केन्द्रित सम्मेलन का आयोजन स्मार्ट सिटी इन्दौर में किया गया, जिसमें देश व विदेश की हजारों की संख्या में महिला पर्यटक उद्यमियों की सहभागिता सुनिश्चित रही। अतः स्पष्ट होता है कि जिले के बाह्य पर्यटन स्थलों के विकास व विस्तार हेतु शासन स्तर पर महिला सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए पर्यटन केन्द्रों का विकास किया जा रहा है।

संदर्भ –

1. सिंह, डॉ. सुमन्त (2005–06) – मध्यप्रदेश का पारिस्थितिकी पर्यटन, यू.जी.सी. प्रोजेक्ट
2. नेमी, डॉ. जगमोहन (2010) – पर्यटन मार्केटिंग में विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3. द्विवेदी, कैलाश (1995) – राय ऋग्वैदिक भूगोल, साहित्य निकेतन, कानपुर
4. पुरोहित, खण्डेवाल (1993) – सांस्कृतिक भूगोल, नूतन प्रकाशन, कोट द्वार, उत्तरप्रदेश
5. भाटिया ए.के. (1978) – टुरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली

6. माथुर सुरेन्द्र (1962) – यात्रा साहित्य का उद्‌भव और विकास, साहित्य प्रकाशन मालीवाड़ा, दिल्ली
7. डॉ. नेगी, जगमोहन – पर्यटन यात्रा के सिद्धान्त
8. भाटिया, ए.के. – टूरिज्म डेवलपमेंट ऑफ प्रिंसिपल एण्ड प्रेक्टिस
9. डॉ. काला, एस.पी. गढ़वाल – हिमालय में तीर्थ यात्रा एवं नया पर्यटन
10. योजना पत्रिका – पर्यटन विशेषांक
11. कुरूक्षेत्र पत्रिका – पर्यटन विशेषांक
12. सरित पत्रिका – पर्यटन विशेषांक